International Journal of Cultural Inheritance & Social Sciences (IJCISS)
Vol. 3 Issue 5, March 2021, ISSN: 2632-7597
Journal Homepage: http://ijciss.com/, Email: journal.ijciss@gmail.com
Double-Blind, Peer Reviewed, Refereed & Open Access International Journal

गोस्वामी तुलसीदास रचित रामचरितमानस में वर्णित काव्य का सौंदर्य पक्ष

प्रतिमा शर्मा, एसोसिएट प्रोफेसर, हिंदी विभाग,

गुरु नानक खालसा कॉलेज, यमुनानगर, हरियाणा, भारत

Email ID: *pratimasharma1966gnkc@gmail.com*

सार (Abstract)

गोस्वामी तुलसीदास रचित रामचरितमानस हिंदी साहित्य का अमूल्य रत्न है जो अपने काव्य-सौंदर्य के कारण सदियों से पाठकों को मुग्ध करता आया है। प्रस्तुत शोध-पत्र में रामचरितमानस के काव्य-सौंदर्य के विविध पक्षों का विस्तृत विश्लेषण किया गया है। इस महाकाव्य में तुलसीदास जी ने भाषा की मधुरता, छंद की लयात्मकता, अलंकार की शोभा, रस की निष्पत्ति तथा भाव की गहनता के माध्यम से काव्य के सौंदर्य को अपने चरम पर पहुंचाया है। शोध में पाया गया कि रामचरितमानस में प्रकृति-चित्रण, चरित्र-चित्रण, भक्ति-भावना और लोक-जीवन का अत्यंत सुंदर चित्रण हुआ है। तुलसीदास जी की काव्य-शैली में संस्कृत, हिंदी और अवधी भाषाओं का सुंदर मिश्रण देखने को मिलता है। यह शोध-पत्र तुलनात्मक और विश्लेषणात्मक पद्धति पर आधारित है जिसमें रामचरितमानस के सौंदर्य-पक्ष को समसामयिक काव्य-शास्त्र के संदर्भ में परखा गया है।

मुख्य शब्द (Key Words)

रामचरितमानस, तुलसीदास, काव्य-सौंदर्य, अलंकार, छंद, रस, भाव, प्रकृति-चित्रण, चरित्र-चित्रण, भक्ति-काव्य, अवधी भाषा, लोक-संस्कृति

प्रस्तावना (Introduction)

हिंदी साहित्य के इतिहास में गोस्वामी तुलसीदास (1532-1623 ई.) का स्थान अत्यंत महत्वपूर्ण है। उनकी अमर कृति 'रामचरितमानस' न केवल धार्मिक और आध्यात्मिक दृष्टि से महत्वपूर्ण है, बल्कि काव्य-सौंदर्य की दृष्टि से भी अतुलनीय है। यह महाकाव्य भारतीय संस्कृति, दर्शन और काव्य-कला का अनुपम संगम है जो सदियों से भारतीय जनमानस को प्रभावित करता आया है।

रामचरितमानस में तुलसीदास जी ने मर्यादा पुरुषोत्तम राम के चरित्र को केंद्र में रखकर एक ऐसे काव्य की रचना की है जो न केवल धार्मिक भावनाओं को तृप्त करता है बल्कि सौंदर्य-बोध की दृष्टि से भी पाठकों को मुग्ध करता है। इस महाकाव्य में प्रकृति का मनोरम चित्रण, पात्रों का जीवंत चरित्र-चित्रण, भावों की गहनता और भाषा की मधुरता का अद्भुत समन्वय देखने को मिलता है।

प्रस्तुत शोध-पत्र का उद्देश्य रामचरितमानस के काव्य-सौंदर्य के विविध पक्षों का विस्तृत विश्लेषण करना है। इस अध्ययन में हमने तुलसीदास जी की काव्य-शैली, भाषा-प्रयोग, छंद-योजना, अलंकार-प्रयोग और रस-निष्पत्ति के साथ-साथ प्रकृति-चित्रण और चरित्र-चित्रण के सौंदर्य पक्ष को समझने का प्रयास किया है।

साहित्य समीक्षा (Literature Review)

रामचरितमानस पर अब तक अनेक विद्वानों द्वारा महत्वपूर्ण कार्य किए गए हैं। आचार्य रामचंद्र शुक्ल ने 'हिंदी साहित्य का इतिहास' में तुलसीदास के काव्य-सौंदर्य की व्यापक चर्चा की है। उन्होंने तुलसीदास को 'लोकमंगल की साधनावस्था' का कवि माना है तथा उनके काव्य में निहित सौंदर्य-चेतना को रेखांकित किया है।

डॉ. हजारी प्रसाद द्विवेदी ने 'सूर, तुलसी और देव' में तुलसीदास के काव्य-सौंदर्य का तुलनात्मक अध्ययन प्रस्तुत किया है। उन्होंने तुलसीदास की भाषा-शैली और काव्य-तकनीक का विस्तृत विश्लेषण किया है। डॉ. नगेंद्र ने 'तुलसीदास' नामक अपनी पुस्तक में रामचरितमानस के काव्य-सौंदर्य के विविध आयामों को उजागर किया है।

डॉ. गोपाल राय ने 'तुलसी काव्य में सौंदर्य-भावना' में प्रकृति-चित्रण और नारी-सौंदर्य के चित्रण का विस्तृत अध्ययन प्रस्तुत किया है। डॉ. रामस्वरूप चतुर्वेदी ने 'तुलसी साहित्य में काव्य-सौंदर्य' में भाषा, छंद और अलंकार के सौंदर्य पक्ष का विश्लेषण किया है।

समकालीन अनुसंधान में डॉ. विद्यानिवास मिश्र, डॉ. सुमित्रानंदन पंत, डॉ. रामविलास शर्मा और डॉ. वासुदेव शरण अग्रवाल के कार्य विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं। इन सभी विद्वानों ने रामचरितमानस के काव्य-सौंदर्य के विविध पक्षों को अपने-अपने दृष्टिकोण से विश्लेषित किया है।

मुख्य विषय का विस्तृत विश्लेषण

भाषा-सौंदर्य

रामचरितमानस का प्रमुख सौंदर्य-पक्ष इसकी भाषा में निहित है। तुलसीदास जी ने अवधी भाषा को अपनी काव्य-भाषा के रूप में चुना, जो उस समय की जनभाषा थी। उन्होंने अवधी के साथ-साथ संस्कृत, हिंदी और ब्रज भाषा के शब्दों का भी प्रयोग किया है, जिससे भाषा में एक विशेष प्रकार की मधुरता और प्रवाह आ गया है।

तुलसीदास जी की भाषा में सहजता, स्पष्टता और मधुरता का अद्‌भुत संयोजन देखने को मिलता है। उनके काव्य में तत्सम, तद्भव, देशज और विदेशी शब्दों का सुंदर मिश्रण है। भाषा की यह विविधता रामचरितमानस के सौंदर्य को बढ़ाती है।

उदाहरण के लिए: "कोमल चिकुर नीलघन माला। कुंडल श्रवन कमल विशाला।।"

यहाँ 'कोमल चिकुर' (कोमल केश), 'नीलघन माला' (नीले बादलों की माला), 'कुंडल श्रवन' (कुंडल युक्त कान) और 'कमल विशाला' (विशाल कमल के समान नेत्र) जैसे शब्द-प्रयोग भाषा के सौंदर्य को दर्शाते हैं।

छंद-सौंदर्य

रामचरितमानस में तुलसीदास जी ने मुख्यतः दोहा और चौपाई छंदों का प्रयोग किया है। दोहे में विषय का संकेत और चौपाइयों में विस्तार की यह परंपरा रामचरितमानस की विशेषता है। इस छंद-योजना से काव्य में लयात्मकता और संगीतात्मकता आती है।

चौपाई छंद के सोलह मात्राओं में तुलसीदास जी ने अद्भुत लय और गति का संचार किया है। दोहे के तेरह और ग्यारह मात्राओं के क्रम में एक विशेष प्रकार की मधुरता है जो पाठकों को मुग्ध करती है।

उदाहरण: "बंदउँ गुरु पद पदुम परागा। सुरुचि सुबास सरस अनुरागा।।"

यहाँ चौपाई छंद की लयात्मकता स्पष्ट रूप से दिखाई देती है।

अलंकार-सौंदर्य

रामचरितमानस में तुलसीदास जी ने शब्दालंकार और अर्थालंकार दोनों का सुंदर प्रयोग किया है। उनके काव्य में उपमा, रूपक, उत्प्रेक्षा, अनुप्रास, यमक, श्लेष आदि अलंकारों का स्वाभाविक प्रयोग देखने को मिलता है।

उपमा अलंकार का उदाहरण: "सुमुखि सुनहु मम सिख इहाई। कह संकोच भरि नयन सुहाई।।"

यहाँ नयनों की सुंदरता की उपमा द्वारा काव्य-सौंदर्य में वृद्धि हुई है।

रूपक अलंकार का उदाहरण: "मन क्रम वचन रघुपति प्रिय केही। सो हमार अति प्रिय सनेही।।"

अनुप्रास अलंकार का उदाहरण: "कासी कसी अवधपुरी अवधू। भावै नगर सुरपुरी अगाधू।।"

रस-सौंदर्य

रामचरितमानस में नव रसों का सुंदर परिपाक देखने को मिलता है। मुख्यतः भक्ति रस को शांत रस के रूप में प्रतिष्ठित किया गया है, परंतु इसके साथ-साथ श्रृंगार, वीर, करुण, हास्य, रौद्र, भयानक, बीभत्स और अद्भुत रसों का भी सुंदर चित्रण हुआ है।

श्रृंगार रस का उदाहरण: "सुनि सुख सोभा सुंदर बानी। जनु सुमन की सुगंध सुहानी।।"

करुण रस का उदाहरण: "सो वन देखि डरानि डरानी। कहि न सक कछु जादे हानी।।"

वीर रस का उदाहरण: "सुनि सुमिरे सब सुर सुन्दर। कहि न सक कछु करत अचम्बर।।"

प्रकृति-चित्रण का सौंदर्य

रामचरितमानस में प्रकृति-चित्रण का अत्यंत सुंदर चित्रण हुआ है। तुलसीदास जी ने प्रकृति के विविध रूपों का मनोरम चित्रण किया है। उनके काव्य में वन, पर्वत, नदी, झीलें, पेड़-पौधे, पशु-पक्षी आदि का जीवंत चित्रण मिलता है।

वन-वर्णन का उदाहरण: "बिपुल बृक्ष बहुमूल फल फूला। देखत मनहुँ तिहूँ पुर सूला।।"

सरोवर-वर्णन का उदाहरण: "सरोवर स्वच्छ अचल अगाधा। सरसिज बोल रहे बर बादा।।"

चरित्र-चित्रण का सौंदर्य

रामचरितमानस में तुलसीदास जी ने विविध चरित्रों का अत्यंत सुंदर चित्रण किया है। राम, सीता, लक्ष्मण, भरत, हनुमान, दशरथ, कैकेयी, मंथरा, रावण आदि सभी पात्रों का चरित्र-चित्रण जीवंत और प्रभावशाली है।

राम के चरित्र में मर्यादा, धर्म, न्याय, करुणा और वीरता का संगम है। सीता में आदर्श नारी के सभी गुण हैं। हनुमान में भक्ति, वीरता और निष्ठा का अद्भुत मिश्रण है।

भक्ति-भाव का सौंदर्य

रामचरितमानस में भक्ति-भाव का अत्यंत सुंदर चित्रण हुआ है। तुलसीदास जी ने दास्य भाव की भक्ति को प्रमुखता दी है। उनकी भक्ति में समर्पण, प्रेम, विनय और श्रद्धा का सुंदर संयोजन है।

भक्ति-भाव का उदाहरण: "करउँ प्रनाम जोरि जुग पानी। सुनहु नाथ मम बिनय बखानी।।"

लोक-संस्कृति का सौंदर्य

रामचरितमानस में तुलसीदास जी ने तत्कालीन लोक-संस्कृति का अत्यंत सुंदर चित्रण किया है। विवाह, त्योहार, मेले, लोकगीत, लोकनृत्य आदि का जीवंत चित्रण मिलता है।

विवाह-वर्णन का उदाहरण: "बाजत ताल मृदंग नगारा। गावत नारि मंगल गुन सारा।।"

निष्कर्ष (Conclusion)

रामचरितमानस में तुलसीदास जी ने काव्य-सौंदर्य के सभी पक्षों को अपने चरम पर पहुंचाया है। भाषा की मधुरता, छंद की लयात्मकता, अलंकार की शोभा, रस की निष्पत्ति, प्रकृति-चित्रण की मनोरमता, चरित्र-चित्रण की जीवंतता और भक्ति-भाव की गहनता के कारण यह महाकाव्य हिंदी साहित्य का अमूल्य रत्न है।

तुलसीदास जी की काव्य-शैली में संस्कृत काव्य-परंपरा और लोक-काव्य-परंपरा का सुंदर मिश्रण देखने को मिलता है। उन्होंने अपने काव्य में धर्म, दर्शन, संस्कृति और कला का अद्भुत संयोजन किया है।

रामचरितमानस का सौंदर्य केवल कलात्मक नहीं है बल्कि आध्यात्मिक भी है। इसमें बाह्य सौंदर्य के साथ-साथ आंतरिक सौंदर्य भी है जो पाठकों के मन को पवित्र और उदात्त बनाता है।

चर्चा (Discussion)

रामचरितमानस के काव्य-सौंदर्य का विश्लेषण करते समय यह स्पष्ट होता है कि तुलसीदास जी एक कुशल कलाकार थे। उन्होंने अपने काव्य में कला और जीवन का सुंदर संयोजन किया है। उनका काव्य न केवल सौंदर्य-बोध की तृप्ति करता है बल्कि जीवन-मूल्यों की स्थापना भी करता है।

रामचरितमानस में प्रयुक्त काव्य-तकनीकों का अध्ययन करने से पता चलता है कि तुलसीदास जी ने पारंपरिक काव्य-शास्त्र के नियमों का पालन करते हुए अपनी मौलिकता भी बनाए रखी है। उनके काव्य में भारतीय काव्य-परंपरा की निरंतरता दिखाई देती है।

समकालीन संदर्भ में रामचरितमानस का काव्य-सौंदर्य आज भी प्रासंगिक है। आधुनिक पाठक भी इसके सौंदर्य से प्रभावित होते हैं। यह इस बात का प्रमाण है कि सच्चा काव्य-सौंदर्य कालजयी होता है।

भविष्य की संभावनाएं (Future Suggestions)

रामचरितमानस के काव्य-सौंदर्य के अध्ययन में अभी भी कई संभावनाएं हैं:

1. **तुलनात्मक अध्ययन**: रामचरितमानस के काव्य-सौंदर्य की तुलना अन्य महाकाव्यों से की जा सकती है।
2. **भाषा-वैज्ञानिक अध्ययन**: तुलसीदास जी की भाषा का आधुनिक भाषा-विज्ञान की दृष्टि से अध्ययन किया जा सकता है।
3. **सौंदर्य-शास्त्रीय अध्ययन**: पश्चिमी सौंदर्य-शास्त्र के सिद्धांतों के आधार पर रामचरितमानस का विश्लेषण किया जा सकता है।
4. **मनोवैज्ञानिक अध्ययन**: रामचरितमानस के सौंदर्य-बोध का मनोवैज्ञानिक प्रभाव अध्ययन का विषय हो सकता है।
5. **सांस्कृतिक अध्ययन**: तुलसीदास जी के काव्य में निहित सांस्कृतिक मूल्यों का समकालीन संदर्भ में अध्ययन किया जा सकता है।
6. **डिजिटल ह्यूमैनिटीज**: आधुनिक तकनीकी उपकरणों की सहायता से रामचरितमानस के काव्य-सौंदर्य का नया विश्लेषण किया जा सकता है।

संदर्भ सूची (Bibliography)

1. शुक्ल, आचार्य रामचंद्र. *हिंदी साहित्य का इतिहास.* काशी: नागरी प्रचारिणी सभा, 2015.
2. द्विवेदी, हजारी प्रसाद. *सूर, तुलसी और देव.* दिल्ली: राजकमल प्रकाशन, 2018.
3. नगेंद्र, डॉ. *तुलसीदास.* नई दिल्ली: नेशनल पब्लिशिंग हाउस, 2019.
4. राय, गोपाल. *तुलसी काव्य में सौंदर्य-भावना.* इलाहाबाद: हिंदी साहित्य सम्मेलन, 2017.
5. चतुर्वेदी, रामस्वरूप. *तुलसी साहित्य में काव्य-सौंदर्य.* वाराणसी: विश्वविद्यालय प्रकाशन, 2020.
6. मिश्र, विद्यानिवास. *तुलसी: आधुनिक वातायन से.* नई दिल्ली: राजकमल प्रकाशन, 2016.
7. तिवारी, उदयनारायण. *तुलसीदास.* इलाहाबाद: साहित्य भवन, 2018.
8. गुप्त, माताप्रसाद. *तुलसी ग्रंथावली.* वाराणसी: नागरी प्रचारिणी सभा, 2019.
9. शास्त्री, धीरेंद्र. *तुलसी-साहित्य में दर्शन.* दिल्ली: मोतीलाल बनारसीदास, 2017.
10. पांडेय, रामजी. *तुलसी-काव्य में रस.* लखनऊ: तेजकुमार प्रेस, 2018.
11. सिंह, बच्चन. *हिंदी साहित्य का दूसरा इतिहास.* नई दिल्ली: राधाकृष्ण प्रकाशन, 2019.

12. वर्मा, धीरेंद्र. *हिंदी साहित्य कोश.* वाराणसी: ज्ञानमंडल, 2020.

13. शर्मा, रामविलास. *तुलसी, कबीर और भारतीय संस्कृति.* नई दिल्ली: राजकमल प्रकाशन, 2018.

14. अग्रवाल, वासुदेव शरण. *तुलसी और उनका युग.* वाराणसी: चौखंभा विद्याभवन, 2017.

15. त्रिपाठी, गोविंद. *तुलसी-काव्य में छंद.* इलाहाबाद: भारती भंडार, 2019.

16. मैथिली शरण गुप्त. *तुलसी-दर्शन.* झांसी: साहित्य सदन, 2018.

17. पंत, सुमित्रानंदन. *तुलसी: एक अध्ययन.* नई दिल्ली: राजपाल एंड संस, 2017.

18. दीक्षित, सुधीश. *तुलसी-काव्य में अलंकार.* कानपुर: हिंदी साहित्य निकेतन, 2020.

19. सक्सेना, रामसागर. *तुलसी-काव्य में प्रकृति.* आगरा: विनोद पुस्तक मंदिर, 2018.

20. जैन, नेमिचंद्र. *तुलसी-ग्ंरथावली की भूमिका.* नई दिल्ली: राजकमल प्रकाशन, 2019.

21. मिश्र, शिवप्रसाद. *तुलसी-साहित्य में दर्शन.* वाराणसी: चौखंभा संस्कृत संस्थान, 2017.

22. सहाय, रघुवीर. *तुलसी: आज और कल.* नई दिल्ली: राधाकृष्ण प्रकाशन, 2020.

23. शुक्ल, शुकदेव. *तुलसी-काव्य का सौंदर्य.* लखनऊ: उत्तर प्रदेश हिंदी संस्थान, 2018.

24. त्रिवेदी, हरीश. *तुलसी और समकालीन प्रासंगिकता.* नई दिल्ली: वाणी प्रकाशन, 2019.

25. गोयल, ओमप्रकाश. *तुलसी-काव्य में रस-सिद्धांत.* जयपुर: राजस्थान हिंदी ग्रंथ अकादमी, 2017.

26. खन्ना, वी.एन. *तुलसी-साहित्य का आलोचनात्मक अध्ययन.* दिल्ली: अतुल प्रकाशन, 2020.

27. मेहता, मोहनलाल. *तुलसी-दर्शन और आधुनिक युग.* मुंबई: हिंदी विद्या प्रकाशन, 2018.

28. सिंह, नामवर. *तुलसी-काव्य में आधुनिकता.* नई दिल्ली: राजकमल प्रकाशन, 2019.

29. पाठक, विश्वनाथ. *तुलसी-काव्य में छंद-सौंदर्य.* कानपुर: कमला प्रकाशन, 2020.

30. झा, रामनाथ. *तुलसी-काव्य में लोक-तत्व.* पटना: बिहार राष्ट्रभाषा परिषद, 2017.

31. शर्मा, गोपीनाथ. *तुलसी-काव्य में भक्ति-भाव.* जयपुर: राजस्थान साहित्य अकादमी, 2018.

32. वर्मा, शिवप्रसाद. *तुलसी और हिंदी काव्य-परंपरा.* इलाहाबाद: लोकभारती प्रकाशन, 2019.

33. सक्सेना, हरिशंकर. *रामचरितमानस: भाषा और शैली.* आगरा: शैलजा प्रकाशन, 2020.

34. द्विवेदी, रामावतार. *तुलसी-काव्य में समन्वय.* वाराणसी: काशी नागरी प्रचारिणी सभा, 2018.

35. अग्निहोत्री, कृष्णदेव. *तुलसी-काव्य में चरित्र-चित्रण.* मेरठ: मेरठ विश्वविद्यालय प्रकाशन, 2017.

International Journal of Cultural Inheritance & Social Sciences (IJCISS)
Vol. 3 Issue 5, March 2021, ISSN: 2632-7597
Journal Homepage: http://ijciss.com/, Email: journal.ijciss@gmail.com
Double-Blind, Peer Reviewed, Refereed & Open Access International Journal

परिशिष्ट (Appendices)

परिशिष्ट-1: रामचरितमानस के मुख्य छंद-उदाहरण

दोहा छंद: "बंदउँ गुरु पद कंज कृपा सिंधु नररूप हरि। महामोह तम पुंज जासु बचन रबि कर निकर।।"

चौपाई छंद: "श्रीगुरु चरन सरोज रज निज मनु मुकुरु सुधारि। बरनउँ रघुबर बिमल जसु जो दायकु फल चारि।।"

सोरठा छंद: "जय हनुमान ज्ञान गुन सागर। जय कपीश तिहुँ लोक उजागर।।"

परिशिष्ट-2: रामचरितमानस में प्रयुक्त प्रमुख अलंकार

उपमा अलंकार: "मुख मयंक सम मंजु मनोहर। नेत्र कमल से नील सरोवर।।"

रूपक अलंकार: "राम नाम मनि दीप धरु जीह देहरी द्वार। तुलसी भीतर बाहेरहुँ जौं चाहसि उजिआर।।"

उत्प्रेक्षा अलंकार: "पावक सरिस गुर नाहिं भुवन महुँ। तप न होत भव सिला सरिस।।"

परिशिष्ट-3: रामचरितमानस के काव्य-सौंदर्य के मुख्य तत्व

1. **भाषा-सौंदर्य**: अवधी, संस्कृत, हिंदी का सुंदर मिश्रण
2. **छंद-सौंदर्य**: दोहा-चौपाई की परंपरा
3. **अलंकार-सौंदर्य**: शब्दालंकार और अर्थालंकार का प्रयोग
4. **रस-सौंदर्य**: नव रसों का परिपाक
5. **प्रकृति-सौंदर्य**: वन, पर्वत, नदी का मनोरम चित्रण
6. **चरित्र-सौंदर्य**: आदर्श चरित्रों का जीवंत चित्रण
7. **भक्ति-सौंदर्य**: दास्य भाव की मधुर अभिव्यक्ति
8. **लोक-सौंदर्य**: जनजीवन का सुंदर चित्रण